आदर्शों को जीवन में उतारने में ही कल्याण –गणाचार्य 108 विरागसागर महाराज

शैलेश जैन 'पिन्टू', ललितपुर। देवाधिदेव भगवान महावीर स्वामी का जन्मोत्सव राष्टसंत गणाचार्य विरागसागर महाराज के ससंघ सानिध्य में जैन मंदिरों में प्रभावना पूर्वक मनाया गया। मुख्य आयोजन जैन अटामंदिर जी में हुआ जहां भगवान महावीर की पूजन के उपरान्त तीर्थकर बालक बर्द्धमान का पालना झूला एवं बालक्रीडायें हुई जिसमें भारी संख्या में धर्मालुजन सम्मिलित हुए।

इस मौके पर धर्मसभा में गणाचार्य महाराज ने कहा भगवान महावीर स्वामी मात्र जैनियों के नहीं अपितु समग्र विश्व के थे उन्होने सत्य की खोज कर प्राणी मात्र को सत्य क्या है? सत्य का मार्ग क्या है? यह जीवन में उतार कर बतलाया है। हर व्यक्ति जीने की कला के साथ जिए 'स्वयं भी जिओ और दूसरों को भी जीने दो' का सूत्र वर्तमान में आज भी आदर्श बना हुआ है। उन्होंने कहा भगवान महावीर की आदर्श चर्या का प्रभाव मात्र जैनों पर नहीं अपितु अन्य साधुओं पर भी पड़ा । भगवान महावीर ने दीन दुखियों की रक्षा करने की बात नहीं, वरन कहा कि अपनी आत्मा की तरह ही दूसरों की आत्मा है एक दूसरे के सुखदुख में सहभागी बनें। उन्होने कहा उनके आदर्शो को जीवन में उतारने की आवश्यकता है तभी भगवान महावीर स्वामी की जयंती मनाना सार्थक होगा। इसके पूर्व आर्यिका विशिष्ट श्री माता जी ने दीक्षा दिवस पर गणाचार्य महाराज से आशीर्वाद ग्रहण किया। भगवान महावीर स्वामी एवं गणाचार्य महाराज की संगीतमय पूजन आर्यिका विश्वास श्री माता जी ने भक्तिभाव से सम्पन्न कराई। जैन पंचायत के पूर्व अध्यक्ष सुन्दरलाल शीलचंद जैन अनौरा ने भगवान को प्रथम पालना झुलाकर पुर्ण्याजन किया। गणाचार्य महाराज का पादप्रक्षालन महेन्द्र जैन भोपाल ने किया गया। जबकि वात्सल्य रत्नाकर आचार्य विमलसागर जी महाराज एवं समाधि सम्राट आचार्य सन्मतिसागर जी महाराज के चित्र के सम्मुख दीपप्रज्जवलन समाज श्रेष्ठियों द्वारा हुआ। शाम को सावरकर चौक से भगवान महावीर स्वामी की भव्य शोभायात्रा परम्परागत मार्ग से निकाली गयी, जिसमें श्रद्धालुजन महावीर स्वामी की जय जयकार करते हुए चल रहे थे, साथ ही अश्वों पर सवार नवयुवक ध्वज पताकायें लिए हुए चल रहे थे। वीर सेवा संघ का धर्मचक्र, वीर व्यायामशाला नयामंदिर, बडामंदिर के स्वयंसेवक लेजम चाचर के माध्यम से प्रदर्शन कर रहे थे। जैन मिलन सिविल लाइन, मण्डल सेवा मण्डल, भाग्योदय रक्तदान समिति, दि. जैन महासमिति, श्रमणोपासक संघ, समाधिसागर सेवा संघ, विद्यासागर सेवा संघ, तारण तरण सेवा संघ, दयोदय पशु संरक्षण केन्द्र, दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप मंच, चन्द्रप्रभु महिला मण्डल, जैन मिलन महिला, जैन अहिंसा के युवा संघ, विशुद्ध चेतना संघ, जैन युवा संगठन, जैन सेवा संघ, राष्ट्रीय बचत अभिकर्ता संघ, जैन एम्बुलेंस सेवा समिति के स्वयंसेवकों ने स्थान स्थान पर अपनी व्यवस्थाओं के माध्यम से अगुवाई की। दिगम्बर जैन परिषद द्वारा आयोजित कार्यक्रम में नगर पालिका अध्यक्ष सुभाष जायसवाल, भाजपा जिलाध्यक्ष प्रदीप चौबे, हरीराम निरंजन ने संयुक्त रुप से दीपप्रज्जवलन किया।

गंज बासौदा में महावीर जंयती की धूम

शान्तिकुमार जैन, गंजबासौदा । जैन समाज के आराध्य भगवान महावीर स्वामी की जयंती नगर एवं आस-पास के क्षेत्रों में पूरे उत्साह एवं श्रद्धाभाव के साथ समारोह पूर्वक मनाई गई । प्रात: 7 बजे श्री दिगम्बर जैन मन्दिर धूसरपुरा से चल समारोह प्रारम्भ हुआ सर्व प्रथम धूसरपुरा जैन मन्दिर में भगवान महावीर स्वामी का अभिषेक एवं शान्ति धारा की गई फिर भक्तिभाव के साथ भगवान महावीर की प्रतिमा को चाँदी के विमान में विराजमान कर शोभा यात्रा प्रारम्भ की गई । यह चल समारोह मुख्य मार्गो से होता हुआ महावीर विहार पहुँचा ।

चल समारोह मैं सबसे आगे वीर सेवा दल और उसके बाद त्रिमूर्ति जैन मिलन सेवा दल के कार्यकर्ता दिव्यघोष करते हुये चल रहे थे उनके पीछे जैन पाठशाला की छात्रायें डांडिया खेलते हुये चल रही थी । उसके बाद भजन मण्डली में शामिल श्रद्धालु भजन एवं धार्मिक गीतो से भगवान महावीर स्वामी की आराधना एवं वन्दना करते हुये चल रहे थे । उसके बाद भगवान महावीर स्वामी का विमान स्वधर्मी बन्धु अपने-अपने कंधों पर लेकर चल रहे थे । विमान को कन्धे पर लेने की होड़ लगी हुई थी, विमान के साथ सैकड़ो की संख्या में महिलायें मंगल गीत गाते हुये चल रही थी । मुख्य मार्गों पर जगह-जगह चल समारोह का स्वागत करते हुये नागरिको, संस्थाओं, एवं कई संगठनो ने जगह-जगह भगवान महावीर स्वामी की मंगल आरती उतारी और श्रद्धलुओं को जलपान, ठण्डाई आदि की व्यवस्था की गई ।

तत्पश्चात विमान चल समारोह महावीर बिहार पहुँचा जहां अभिषेक एवं शान्तिधारा कर पुण्यार्जन किया ।

इस वर्ष महावीर जयन्ति पर सकल जैन समाज गंजबासौदा ने एक अनूठी पहल कर गौशाला के लिये 108 ट्रॉली भूसा के बराबर की राशि गौशाला के लिये दान की । साथ एक ओर अनूठी पहल करते हुये दोपहर में नगर के सभी चौराहों पर मिष्ठान वितरण का कार्यक्रम रखा गया । जिसमें लगभग ग्याहर क्विंटल मिष्ठान का वितरण किया गया । दोपहर में पक्षियों के लिए दाना, अस्पताल में फल वितरण, औषधि वितरण व गौशाला पहुँचकर ग्रो गॉस का वितरण किया गया ।

शाम को महावीर बिहार में ही भगवान महावीर स्वामी की संगीतमय आरती हुयी उसके बाद भगवान का पालना झुलाया एवं भगवान महावीर स्वामी के जीवन चरित्र पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये ।

मृत्युभोज करना सही है क्या....???

मृत्युभोज पर होने वाले खर्च को एकत्र कर रचनात्मक कार्यो में लगाया जाए तो 10 वर्ष के अन्दर देश का चौमुखी विकास हो सकता है । औसतन देश में एक मृत्युभोज में लगभग 25-30 हजार खर्च आता है, इस तरह देश में लगभग 33 लाख मृतकों का मृत्युभोज करने में प्रतिवर्ष 50 अरब, 60 करोड़ रुपया मरने वाले के क्रिया कर्म में हलवा पूडी खिलाने में खर्च कर डालते हैं । जो कि असम, नागालैण्ड जैसे छोटे राज्यो के साल भर के बजट से भी ज्यादा है।

महाभारत युद्ध होने का था, अतः श्री कृष्ण ने दुर्योधन के घर जा कर युद्ध न करने के लिये संधि करने का आग्रह किया तो दुर्योधन द्वारा आग्रह ठुकराए जाने पर श्री कृष्ण को कष्ट हुआ और वह चल पड़े, तो दुर्योधन द्वारा श्री कृष्ण से भोजन करने के आग्रह पर कृष्ण ने कहा कि "**सम्प्रीति भोज्यानि आपदा भोज्यानि वा पुनैः**"

हे दुर्योधन-जब खिलोने वाले का मन प्रसन्न हो, खाने वाले का मन प्रसन्न हो, तभी भोजन करना चाहिए । लेकिन जब खिलाने वाले एवं खाने वालो के दिल में दर्द हो, वेदना हो । तो ऐसी स्थिति में कदापि भोजन नही करना चाहिए ।

हिन्दु धर्म में मुख्य 16 संस्कार बनाए है, जिसमें प्रथम संस्कार गर्भाधान एवं अन्तिम तथा 16 वाँ संस्कार अंत्येष्टी है । इस प्रकार जब सत्रहवां संस्कार बनाया ही नही गया तो सत्रहवाँ संस्कार तेरहवी संस्कार कहाँ से आ गया। इससे साबित होता है कि तेरहवी संस्कार समाज के चंद चालक लोगों के दिमाग की उपज़ है । किसी भी धर्मग्रंथ में मृत्यु भोज का विधान नहीं है बल्कि महाभारत के अनुशासन पर्व में लिखा है कि मृत्युभोज खाने वाले की ऊर्जा नष्ट हो जाती है । लेकिन जिसने जीवन पर्यन्त मृत्युभोज खाया हो, उसका तो ईश्वर ही मालिक है। इसीलिये महर्षि दयानन्द सरस्वती व पं. श्रीराम विवेकान्द जैसे महान मनीषियों ने मृत्युभोज का जोरदार ढंग से विरोध किया है।

जिस भोजन बनाने का कृत्य जैसे लकड़ी फाड़ी जाती तो रो कर, आटा गूँथा जाता है तो रो कर, भोजन बनाया जाता है तो रो कर यानि हर कृत्य आँसुओं से भीगा हुआ है । ऐसे आँसूओं से भीगे निकृष्ट भोजन एवं तेरहवीं भोज का पूर्ण रुप से बहिष्कार कर समाज को एक सही दिशा देवें । जानवरो से सीखें, जिसका साथी बिछुड़ जाने पर वह उस दिन चारा नही खाता है । हम जबकि 84 लाख योनियों में श्रेष्ठ मानव, जवान आदमी की मृत्यु पर हलुवा पूड़ी खाकर शोक मनाने का ढोंग रचता है, इससे बढ़कर निंदनीय कोई दूसरा कृत्य हो नहीं सकता है । यदि आप इस बात से सहमत है, तो आप आज से ही संकल्प लें कि आप किसी के मृत्यु भोज को ग्रहण नही करेंगे । मृत्युभोज समाज में फैली कुरीति है व विकसित समाज के लिये अभिशाप है ।

– अनिल जैन, न्यू देवास रोड़, इन्दौर

आगामी अंक प्रतिशाभाली बच्चों की मेहनत को समर्पित रहता है । जो बच्चे दिन-रात मेहनत कर परीक्षाओं में अच्छे अंक अर्जित कर अपने परिवार का नाम रोशन करते है । हम उन्हीं बच्चों के अभिभावकों से करबद्ध निवेदन करते है कि वे अपने बच्चों की इस सफलता को सभी के साथ बांटे । बस, आपको एक छोटा सा कार्य करना है, अपने बच्चों की अंकसूची की फोटोकॉपी के साथ फोटो लगाकर, उस पर अपने परिवार के मुखिया का नाम लिखकर हमारे कार्यालय 64, न्यू देवास रोड़ या 16, महारानी रोड़, इन्दौर पर भेजने का प्रयास करें । इस पूरे कार्य में मात्र 5-10 मिनिट खर्च होंगे और आपके होनहार बालक / बालिका का चित्र आगामी अंक में प्रकाशित हो जावेगा । .... तो देर ना करे, आप अपने बच्चे के लिए इतना तो कर ही सकते है ....